विचार बिन्दु

हम सभी ईश्वर से दया की प्रार्थना करते हैं और वही प्रार्थना हमे दूसरों पर दया करना सिखाती है। –शेक्सपियर

युवा बने व दिखने की लालसा को भी बाजार ने भुनाया

पिछले हफ्ते यह खबर आई कि भारत में बुढ़ापे की निशानी मानी जाने वाली चेहरे पर झुर्रियों को हटाने का दावा करने वाली क्रीम की बिक्री बढ़ गई है। खबर में कहा गया है कि एंटी एजिंग क्रीम की बिक्री पिछले दो वर्षों में 27 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 35 प्रतिशत पहुंच गई है। ऐसा लगता है कि लोगों में युवा बने रहने की कोशिश करने का क्रेज़ बढ़ रहा है। वैसे तो चिर युवा बने रहने की लालसा भारत के लोगों में अनंत काल से रही है। सभी सभ्यताओं में युवा को उमंग का प्रतीक माना गया है और बुढ़ापे को तकलीफों की खान। कवियों और शायरों ने भी जवानी का गुणगान और उसके जल्दी बीत जाने पर टेसुए बहाये हैं। फ़िराक़ गोरखपुरी ने कहा 'रात भी नींद भी कहानी भी/ हाए क्या चीज़ है जवानी भी'। ऐसे ही ज़फ़र इक़बाल कहते हैं 'सफ़र पीछे की जानिब है क़दम आगे है मेरा/ मैं बूढ़ा होता जाता हूं जवां होने की ख़ातिर'। जवान बने रहने के लिए बहुत से लोग एंटी एजिंग क्रीम के साथ हैल्थ टिप्स भी लेते है। ऐसी टिप्स देने वालों का बाजार भी इन दिनों खूब गुलज़ार है। देखा जाए तो बुढ़ापा दुनिया भर के लिए चिंता का विषय है। सभी जगह बड़े-बड़े वैज्ञानिक और अनुसंधानकर्ता इस अवस्था से बचने के उपाय खोज रहे हैं। ऐसे रसायन तैयार करने के लिए अनुसंधान चल रहे हैं जिनकी मदद से शरीर में बूढ़ी हो रही कोशिकाओं को फिर से जवान किया जा सके और मौजूदा कोशिकाओं को बूढ़ा होने से रोका जा सके। अपने अनुसंधानों से वैज्ञानिक ना सिर्फ़ इन्सान की उम्र में इज़ाफ़ा होने की उम्मीद कर रहे है, बल्कि वे बहुत सी बीमारियों से लड़ने में भी मदद मिल पाने की आस कर रहे हैं। लेकिन साथ ही यह सवाल भी बना हुआ है कि इन तजुर्बों के बाद अगर कामयाबी मिल भी जाती है तो कितने और साल मनुष्य अपनी उम्र में जोड़ सकेगा? अनुसंधानकर्ताओं की मानें तो 135 साल की उम्र तो कम से कम हर इंसान को मिल जाने की आशा की ही जा सकती है। मगर, ज़िंदगी का अंत तो फिर भी मृत्यु ही है। कोई भी अनुसंधान किसी भी जीव को मृत्यु से नहीं बचा सकता। वर्ष 1971 में आई फिल्म 'आनंद' में मृत्यु के कगार पर खड़ा कैंसर पीड़ित नायक कहता है– **बाबू मोशाय, ज़िंदगी बड़ी होनी चाहिए, लंबी नहीं।** यह तो अब सभी मानते हैं कि ज़िंदगी छोटी हो या बड़ी वो सेहतमंद, खुशहाल और कामयाब होनी चाहिए। ऐसा होने के लिए बहुत से कारकों में एक है परिवार। भारतीय सभ्यता में परिवारों में बुजुर्गों को बोझ या बाधा के रूप में नहीं देखा गया है। यहां उनका सम्मान होता रहा है। ज्ञान और मार्गदर्शन के लिए उनकी ओर देखा जाता रहा है। जहां युवावस्था और शारीरिक सुंदरता को उम्र के साथ आने वाली बुद्धिमत्ता से ज़्यादा महत्व दिया जाता है उनका नज़रिया अलग है। इसीलिए ऐसे लोग अक्सर बुढ़ापे से लड़ने का विकल्प चुनते हैं और कैसे युवा बने रहें उसके जतन करते हैं।

उम्र बढ़ना अपरिहार्य है। सभी इस सच को भली भांति जानते हैं, फिर भी वृद्धावस्था को स्वीकार करना आसान नहीं होता। इसीलिए अब उम्र के सकारात्मक बढ़ने की बात की जाने लगी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने तो बढ़ती उम्र की अपनी परिभाषा में ही सकारात्मकता को जोड़ा है। उम्र बढ़ने का मतलब है वृद्धावस्था और जीवन के इस कालखंड में स्वस्थ रहना सबसे पहली अपेक्षा होती है, जिसके लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन व्यक्ति में सक्षम कार्यात्मक क्षमता को विकसित करने और उसे बनाए रखने की सलाह देता है। महापुरुषों ने जीवन को अपनी-अपनी दृष्टि से देखा है। महावीर की वाणी में बेहतर जीवन के लिए कर्म का सिद्धांत है जबकि बुद्ध का जीवन सिद्धांत करुणा का है। महात्मा गांधी ने सबको सम्मिलित करते हुए सत्य और अहिंसा का विचार दिया। इन सब को एक बेहतर मानवीय समाज बनाने के लिये ऐसा करना पड़ा। अनंत काल से यह सवाल उठता रहा है कि जीवन क्या है, उसका उद्देश्य क्या है? हालांकि बीसवीं सदी के प्रख्यात विचारक अल्बर्ट कामू ने जीवन को निरर्थक (एब्ज़र्ड) बताया। फिर भी आस्थावान लोगों ने यह माना कि छोटे-मोटे दुखों को छोड़ दें, तो जीवन कृतज्ञता है। फिर हम कृतज्ञता को आनंद क्यों नहीं बना लेते? वास्तव में कृतज्ञता के आनंद का भाव जीवन के संध्याकाल की उम्र, जिसे बुढ़ापा कहा जाता है, में ही समझ में आता है। उम्र के साथ बहुत सी चीजें आती हैं। किसी वृद्ध व्यक्ति के लिए उसका अचानक जोर का अट्टहास लगाना भी उसे एक झटका दे सकने वाला हो सकता है। वृद्धावस्था में सलाह दी जाती है कि युवा लोगों वाली तेजी और हड़बड़ी को उन्हें हर कीमत पर टालना चाहिए। बुढ़ापे की उम्र में संज्ञानात्मक गिरावट बहुत डरावनी हो सकती है। खास कर याददास्त कमजोर हो जाने की। किसी को यह पसंद नहीं होगा कि बुढ़ापे में वह ऐसी व्याधियों से घिर जाए कि वह अपने ही परिवार में छिटका हुआ और बोझ बन कर रह जाए। लेकिन जो लोग अपने बुढ़ापे को नकारात्मकता से नहीं लेते वे खुद अपनी हालत पर हंस सकते हैं। वे यह स्वीकार कर लेते हैं कि '**जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहियो**'। सोचने की बात है कि बुढ़ापे में मनुष्य की महत्वाकांक्षाएं बहुत हद तक खत्म हो जाती हैं। इस उम्र में लोग दुनिया को, वह जैसी है वैसी ही, आसानी से स्वीकार करने लगते हैं, भले ही वे उसे रसातल में जाने से बचाने की कोशिश भी करते रहते हैं। इस उम्र में लोग मानवीय कमजोरियोंको स्वीकार ही नहीं करने लगते हैं अपितु अपनी ही ऐसी कमजोरियों पर मुस्करा भी सकते हैं। इस उम्र में जीवन को सहज ही धीमी गति से लिया जाने लगता है।

वर्ष 1971 में आई फिल्म 'आनंद' में मृत्यु के कगार पर खड़ा कैंसर पीड़ित नायक कहता है– बाबू मोशाय, ज़िंदगी बड़ी होनी चाहिए, लंबी नहीं। यह तो अब सभी मानते हैं कि ज़िंदगी छोटी हो या बड़ी वो सेहतमंद, खुशहाल और कामयाब होनी चाहिए। ऐसा होने के लिए बहुत से कारकों में एक है परिवार। भारतीय सभ्यता में परिवारों में बुजुर्गों को बोझ या बाधा के रूप में नहीं देखा गया है। यहां उनका सम्मान होता रहा है। ज्ञान और मार्गदर्शन के लिए उनकी ओर देखा जाता रहा है।

इस कथन में दम है कि जीवन में धीमे होने का भी आनंद लिया जा सकता है। चीज़ों के पाने के लिए उनके पीछे दौड़ने की अपेक्षा उन्हें निहारने का आनंद क्यों न लिया जाय! वृद्धावस्था में खुशी बहुत झंझोड़ने वाली नहीं होती है। वह पहले जितनी उत्तेजना भी नहीं देती। युवा की खुशी तेज फ़व्वारे की मानिंद फूटती है। छोटी उम्र में खुशी का मतलब एंडोर्फिन होता है जो दर्द की धारणा को अवरुद्ध करने और भलाई की भावनाओं को बढ़ाने वाला रसायन होता हैं जो मानव मस्तिष्क में बनता है। वे दर्द, मांसपेशियों में ऐंठन को रोकते हैं और तनाव से राहत देते हैं। मगर वास्तव में वृद्धावस्था में संतुष्टि ही सबसे बड़ी खुशी होती है। यह समझने की बात होती है कि शांति आराम में है, आराम में खुशी है, और खुशी ही शांति है। वृद्धावस्था में संतुलन बनाना पड़ता है -शरीर का भी और मन का भी। कितना करना है, कितना छोड़ना है। यह भी कि अगर चीज़ें अनुकूल काम नहीं कर रही हैं, तो उस स्थिति को विनम्रता से कैसे स्वीकार करना। इस अवस्था में शरीर और दिमाग़ जितना भी काम करता है उसी में खुश रहना सीखना होता है। दूसरों के प्यार और वफ़ादारी को जानना असल में महान चमत्कार होता है। इस उम्र तक पहुंचने तक लोग न जाने कितने हादसों से गुज़र चुके होते हैं। ऐसा कहा जाता है कि भले ही गड़बड़ हों, जीवन के आखिरी हफ़्ते अक्सर बहुत मीठे और अनुग्रह से भरे होते हैं। एक समय आता है जब अंततः यह एहसास होता है कि कोई किसी को ठीक नहीं कर सकता, बचा भी नहीं सकता, उन्हें भी जिन्हें हम सबसे ज़्यादा प्यार करते हैं। आम तौर पर मौतें सौम्य होती हैं। किसी आस्थावान का कहना है कि मृत्यु कमरे के फ़र्श पर सो जाने और अपने बिस्तर पर जागने जैसा है। बुढ़ापे में यह सीखना होता है कि अब जीवन को नया रूप नहीं दिया जा सकता। सकारात्मकता की यह अवस्था व्यक्ति को महसूस करा सकती है कि वह पहले से ज़्यादा हल्का हो गया है। अब इस बारे में क्या सोचना कि दूसरे लोग हमारे बारे में क्या सोचते हैं। ज़रूर, हर बुढ़ापे में भी अच्छा दिखना चाहता है और आकर्षक होना चाहता है। लेकिन बड़ी योजना में इसका उतना मतलब नहीं। कौन परवाह करता है कि अमुक वृद्ध पड़ा रहता है, आलसी है। वह अब गहरे आत्मिक प्रेम में है, जहां संभवतः वह अपने व्यक्तित्व में होता है और वह अपने आलोक में रहता है। युवावस्था में लोग हमेशा उन पौधों को देख-देख कर उत्साहित होते हैं जिन्हें उन्होंने बरसाती मौसम में पथरीली मिट्टी में लगाये थे, जिन पर अब बेहद चमकीले और ताज़े फूल खिलने लगे हैं। लेकिन अब उन्हें पुराने पेड़ों से बहुत कुछ सीखना होता है। जैसे कि पास के कुछ पुराने जामुन के पेड़ से। वे हर साल रसीले फल देने के लिए फूलों से लड़ जाते हैं। यह काम वे साल-दर-साल करते बूढ़े भी हो जाते हैं। पेड़ जब बूढ़े हो जाते हैं तब उन्हें अपनी झुर्रीदार छाल पर मेकअप लगाने की ज़रूरत नहीं होती है। उनके फूल और फल ज़मीन पर गिर जाते हैं। किसी वृक्ष के नीचे बिखरे पड़े मुरझा रहे फूलों की सुंदरता से भी सीखा जा सकता है। वे कह रहे होते हैं जीवन की इस चरम अवस्था में सभी भाव यदि रस के रूप में परिवर्तित हो कर आनंदमय हो जायें तो बुढ़ापा कृतज्ञतापूर्वक आनंदमय हो जाता है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

जैसलमेर में भारी बरसात से विश्व विख्यात लिविंग फ़ोर्ट के बुर्ज की दीवार गिरी

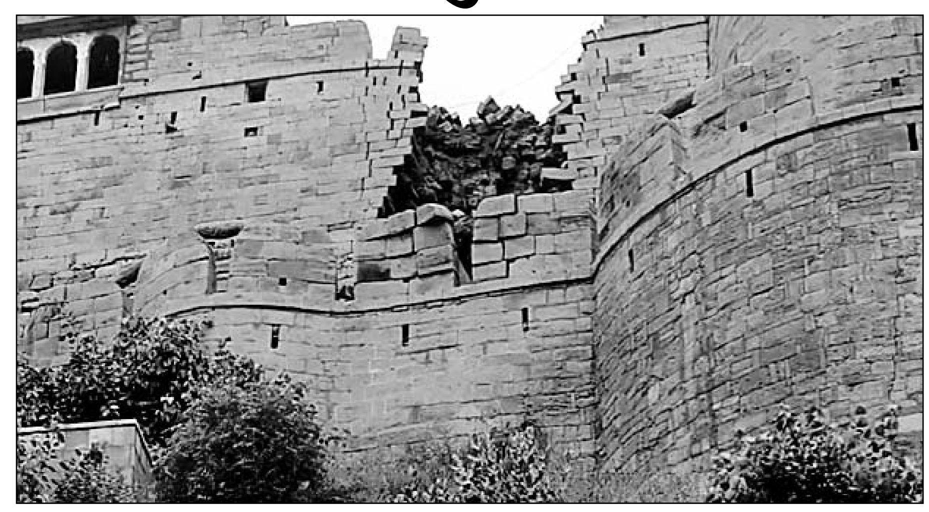

विश्व विख्यात लिविंग फोर्ट के बुर्ज की दीवार बरसात का पानी जाने से गिर गई।

- दीवार के बड़े-बड़े पत्थर परकोटे के ऊपर गिर गए, इस दौरान सड़क पर कोई ट्रॉफिक नहीं था
- जैसलमेर दुर्ग दुनिया का एक मात्र रहवासी किला है, पुराने शहर की लगभग एक चौथाई आबादी अभी भी किले के भीतर रहती है

जैसलमेर, (निसं)। जैसलमेर में पिछले तीन दिन से हो रही भारी बारिश से 99 बुर्जों वाले विश्व विख्यात सोनार किले के एक बुर्ज की दीवार ढह गई। मंगलवार को दिन में शिव रोड की तरफ की सोनार दुर्ग के बुर्ज की दीवार भरभराकर गिर गई। दीवार के बड़े-बड़े पत्थर परकोटे के ऊपर गिर गए। बारिश के दौरान बुर्ज के पत्थर गिरने के दौरान सड़क पर कोई ट्रॉफिक नहीं था, अन्यथा बड़ा हादसा भी हो सकता था। सोनार दुर्ग के बुर्ज की दीवार गिरने की जानकारी मिलने पर नगर परिषद आयुक्त लजपालसिंह और पुलिस की टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने सड़क के दोनों तरफ बैरिकेड लगाकर उसको बंद कर दिया। आगे कोई हादसा ना हो इसका ध्यान रखते हुए नगर परिषद ने अपनी टीम को अलर्ट कर दिया।

शहर के वरिष्ठ नागरीक परमानंद ने बताया कि 23 वर्ष पूर्व भी सोनार दुर्ग की दीवार गिरी थी, जिसमें एक इंसान की पत्थरों के नीचे दबकर मौत हो गई थी। इस दौरान पुरातत्व विभाग द्वारा कई बार परकोटे की दीवार की रिपेयरिंग भी करवाई है। परन्तु रहवासी दुर्ग के स्वरूप को बदल दिए जाने नये निर्माण पहुंच वालों द्वारा बनवा लिए जाने से खतरा दिन प्रतिदिन बढ़ रहा है। न्यायालय की रोक के बाद भी कलेक्टर की सख़्ती नहीं होने से सब चल रहा है। पूर्व में 2011 में तात्कालीन जिला कलेक्टर गिरिराजसिंह कुशवाहा द्वारा किले के कोटड़ी पाड़ा के पांच घरों से दीवार में पानी जाने की जानकारी मिलने पर पांचों परिवारों को सांवल कॉलोनी में निशुल्क भूखंड दिलवाकर पांचों घर खाली करवा दिए गए थे। कुशवाहा का तबादला होने के बाद वो पांचों परिवार वापस आकर कोटड़ी पाड़ा में रहने लगे हैं तथा निशुल्क भूखंडों पर भी कब्ज़ा कर लिया है। प्रशासन पर इतना ज्यादा दबाव है कि वे कोई कार्यवाही करने की हिम्मत ही नही जुटा पा रहे हैं। जानकारी के अनुसार जैसलमेर दुर्ग दुनिया का एक मात्र रहवासी किला है। पुराने शहर की लगभग एक चौथाई आबादी अभी भी किले के भीतर रहती है। किले में नगरपरिषद के दो वार्ड हैं, जहां से पार्षद चुने जाते हैं। जैसलमेर किला राजस्थान का दूसरा सबसे पुराना किला है, जिसे 1156 ई. में रावल (शासक) जैसल ने बनवाया था, जिनके नाम पर इसका नाम पड़ा। किले की विशाल पीले बलुआ पत्थर की दीवारें दिन के समय गहरे भूरे शेर के रंग की होती हैं, जो सूरज ढलने के साथ शहद-सुनहरे रंग में बदल जाती हैं, जिससे किला पीले रेगिस्तान में छिप जाता है। इस कारण इसे स्वर्ण दुर्ग, सोनार किला या गोल्डन फोर्ट के नाम से भी जाना जाता है। जैसलमेर किले को राजस्थान के पांच अन्य किलों के साथ, राजस्थान के पहाड़ी किलों के समूह के तहत यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया है।

केदारनाथ में लैंडस्लाइड में फंसे अजमेर के 13 युवक सकुशल पहुंचे

एनडीआरएफ व एसडीआरएफ के जवानों की मदद से युवकों को हेलीकॉप्टर से रेस्क्यू कर सुरक्षित बाहर निकाला था

केदारनाथ से अजमेर लौटने वाली टीम के सदस्य।

अजमेर, (कासं)। केदारनाथ में भारी बारिश, लैंडस्लाइड और बादल फटने के बाद अजमेर के 13 युवक फंस गए थे। चार दिन तक फंसे रहने के बाद स्थानीय प्रशासन ने एनडीआरएफ व एसडीआरएफ के जवानों की मदद से युवकों को हेलीकॉप्टर से रेस्क्यू कर सुरक्षित बाहर निकाला। अजमेर के सुखाड़िया नगर निवासी सभी 13 दोस्त मंगलवार को केदारनाथ यात्रा से सकुशल अजमेर लौट आए। युवकों के घर आने पर परिजन, रिश्तेदारों व दोस्तें ने राहत की सांस ली। सभी युवकों ने परिजन के साथ मंदिर में पूजा- अर्चना कर ईश्वर का आभार जताया।

युवकों ने बयां किए चार दिन के खौफनाक मंजर:-मंगलवार को सभी 13 दोस्त भरत, उदानिया, राहुल, शेखर, सौरभ, दीपक, विक्की, धीरज, जतिन, अनुराग, प्रकाश व ऋतिक प्राइवेट बस के जरिए अजमेर पहुंचे। अजमेर पहुंचने के बाद परिवार वालों ने राहत की सांस ली। इसके साथ ही परिजन, समाज के लोगों, स्थानीय नागरिकों, दोस्तों ने उनका माला पहनाकर स्वागत किया। सुखाड़िया नगर निवासी भरत उदानिया ने बताया कि वह और उसके 12 दोस्त अजमेर के सुखाड़िया नगर गली नंबर 2 के निवासी हैं। 29 जुलाई को सभी दोस्त केदारनाथ यात्रा के लिए अजमेर से निकले थे, 31 जुलाई को वहां पर पहुंचे, दोपहर में सभी ने पैदल यात्रा केदारनाथ के लिए शुरू कर दी थी। शाम सात बजे के करीब तेज बरसात और पानी का बहाव शुरू हो चुका था। जिसके कारण उन्होंने कुछ किलोमीटर चलने के बाद एक दुकान पर रुके थे। भरत ने बताया दुकान के पीछे की तरफ अचानक तेज धमाके के साथ बादल फटा, जिससे सभी डर गए। अनुराग ने बताया कि बादल फटने के बाद चट्टानें गिरने लगी थी।

स्थानीय लोगों ने बताया कि बादल फटने की वह आवाज थी। पानी के तेज बचाव के चलते लैंडस्लाइड होना शुरू हो गई थी। सभी अपने आपको बचाने के लिए भागना शुरू हो गए, अपने आप को बचाते हुए आगे बढ़ कुछ किलोमीटर चलने के बाद एक दुकान पर जाकर राहत की सांस ली। भरत ने बताया कि करीब सात-आठ किलोमीटर ऊपर आ चुके थे, मंदिर के बीचों-बीच में फंस चुके थे। इसके बाद स्थानीय लोगों की मदद से उन्होंने रहने की व्यवस्था की थी। अनुराग ने बताया कि चार दिनों तक वह पहाड़ियों में फंसे रहे। पहले दिन उन्होंने अपने खर्चे पर ही रहने खाने पीने की व्यवस्था की थी। उसके बाद उनके पास पैसे और खाने-पीने का सामान खत्म होने पर स्थानीय प्रशासन द्वारा मदद की गई। एसडीआरएफ और एनडीआरएफ की रेस्क्यू टीमों ने हेलीकॉप्टर की मदद से रेस्क्यू किया और सिरसा हेलीपैड पर लैंड करवाया। 5 अगस्त को वह नीचे उतर चुके थे। काफी मुश्किलों से हमने हमारी जान बचाई है। अगर हमारा जल्द रेस्क्यू नहीं हुआ होता तो हम मुश्किलों में पड़ जाते। नेटवर्क नहीं होने के कारण परिवार से भी संपर्क नहीं हो पा रहा था।

सीतामाता वन्य जीव अभ्यारण्य प्रतापगढ़ में दूध छाता मशरुम की नई प्रजाति मिली

खाद्य दूध छाता मशरुम (केलोसाइबे इंडिका) की नई जंगली प्रजाति की खोज करने वाली टीम।

- उदयपुर के वैज्ञानिकों वन्य जीव अभ्यारणों एवं जंगलों में दो माह तक सघन निरीक्षण किया
- सीतामाता वन्य जीव अभ्यारण्य, प्रतापगढ़ में दूध छाता मशरुम की एक नई जंगली खाद्य प्रजाति मिली

उदयपुर, (कासं)। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के मशरुम अनुसंधान निदेशालय चम्बाघाट के वडा सोलन (हिमाचल प्रदेश) के द्वारा संचालित अखिल भारतीय समन्वित मशरुम अनुसंधान परियोजना, उदयपुर के वैज्ञानिकों ने राजस्थान के विभिन्न वन्य जीव अभ्यारण्यों एवं जंगलों में खाद्य एवं औषधीय मशरुम की विविधता का अध्ययन करने के लिए माह जुलाई-अगस्त में सघन निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान अभी तक कुल 64 मशरुम प्रजातियों का संग्रहण किया है। निरीक्षण प्रमुख रूप से फुलवारी की नाल, फलासिया-कोटड़ा की नाल, सीतामाता वन्य जीव अभ्यारण्य-प्रतापगढ़, गोगुन्दा, सांडोल माता झाडोलाव झल्लारा, सलूम्बर के जंगलों का किया गया।

अखिल भारतीय समन्वित मशरुम अनुसन्धान परियोजना उदयपुर के प्रभारी व सह आचार्य डॉ. नारायण लाल मीना ने बताया कि दक्षिण राजस्थान के जंगलों में मशरुम की प्रजातियों में काफी विविधता पाई जाती है, क्योंकि इन जंगलों में वनस्पति की प्रजातियों में भी काफी विवधता पाई जाती है। इस कारण मशरुम की प्रजातियों की सर्वाधिक विविधता फुलवारी की नाल, फलासिया-कोटड़ा में मिली। क्योंकि फुलवारी की नाल वनस्पति की विविधता का प्रमुख क्षेत्र है। सघन निरीक्षण के दौरान सीतामाता वन्य जीव अभ्यारण्य, प्रतापगढ़ में दूध छाता मशरुम (केलोसाइबे इंडिका) की एक नई जंगली खाद्य प्रजाति मिली जो खेती की जाने वाली दूध छाता मशरुम से भिन्न प्रकार की है।

इस मशरुम की कैप का परिमाप 30 गुना 28 सेमी, आकार-गोलाकार, रंग -दूध जैसा सफेद, तने की लम्बाई 23-25 सेंटीमीटर तथा एक फ्रूट बॉडी का वजन 2 से 2.25 किलोग्राम दर्ज किया गया जो कि दूध छाता मशरुम की फ्रुट बॉडी का सर्वाधिक वजन है। यहां ऐसे प्रकार की प्रजाति है जिसका उत्तक संवर्धन मशरुम प्रयोगशाला, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर में करके आगे खेती करने की तकनीक विकसित करने का अनुसंधान किया जायेगा। इस प्रजाति की खोज करने वाली टीम में परियोजना प्रभारी डॉ. नारायण लाल मीना के आलावा डॉ. सुरेश कुमार, अविनाश कुमार नागदा व किशन सिंह राजपूत आदि थे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 7 अगस्त, 2024

सावन मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र रात्रि 8:30 तक, परिद्य योग दिन 11:41 तक, तैतिल करण प्रातः 8:59 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 3:15 पर कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरू-वृष, शुक्र-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज राजयोग रात्रि 8:30 तक है। रवियोग रात्रि 8:30 से आरम्भ होगा। आज मधु श्रदा तीज, मेला तीज जयपुर में, लघु तृतीय व्रत है। आज से सकट 2 मु.मास आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:15 तक, शुभ 10:54 से 12:32 तक, चर 3:50 से 5:28 तक, लाभ 5:28 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:58, सूर्यास्त 7:07

मेष
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृष
घर-परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा और सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्य के लिए यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है। आज धार्मिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

कर्क
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। चलते कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

सिंह
नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कन्या
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। अनावश्यक धन खर्च होगा। आज धार्मिक स्थान की यात्रा हो सकती है।

तुला
आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

धनु
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।

मकर
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। व्यावसायिक परेशानियां व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

कुंभ
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन
अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा है।